RPSC Main Exam 2024 : Test Series
Assistant Engineer

विषय : हिन्दी–2

(संक्षिप्तीकरण, वृद्धिकरण, पत्र लेखन, प्रारूप लेखन, अनुवाद)

अनिवार्य प्रश्न पत्र : 12 | परीक्षा की तिथि : 01-02-2026

विस्तार–पूर्ण उत्तर

मॉडल उत्तर

1. (i) (क) शीर्षक: ध्वनि प्रदूषण: एक गंभीर स्वास्थ्य संकट

संक्षिप्तीकरण: तेज़ शोर श्रवण कोशिकाओं को स्थायी क्षति पहुँचाने के साथ–साथ उच्च रक्तचाप, अनिद्रा और मानसिक तनाव का कारण भी बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, 1.5 अरब लोग आंशिक या पूर्ण बहरेपन से प्रभावित हैं। औद्योगिक श्रमिक और युवा इसके प्रति अधिक संवेदनशील हैं। सुरक्षा मानकों की कमी और अनियंत्रित औद्योगीकरण के कारण विकासशील देशों के लोग शोर में जीने को विवश हैं। यह समस्या व्यक्ति और समाज दोनों के लिए घातक है।

(ख) विकासशील देशों के लोगों के जीवन को 'अभिशप्त' इसलिए कहा गया है क्योंकि वहाँ तीव्र औद्योगीकरण और अनौपचारिक क्षेत्र का विस्तार तो हो रहा है, लेकिन शोर–नियंत्रण और सुरक्षात्मक उपायों की भारी कमी है। इस कुप्रबंधन के कारण वहाँ के लोग विवश होकर चारों तरफ से शोर–शराबे वाले माहौल में अपना दिन बिताने के लिए मजबूर हैं।

(ग) तीव्र आवाज़ का प्रभाव केवल हमारे कानों पर ही नहीं, बल्कि पूरे शरीर पर पड़ता है। यह श्रवण कोशिकाओं को नष्ट कर बहरेपन का कारण तो बनती ही है, साथ ही इससे उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अनिद्रा और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ भी पैदा होती हैं।

(ii) (क) **शीर्षकः** भारतीय लोकगीत में स्त्रीयों का महत्व

संक्षिप्तीकरणः लोकगीत लोगों के गीत हैं। जिन्हें कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा समाज अपनाता है। सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए लिखे गए गीतों को लोकगीत कहा जा सकता है।

भारत की विविधता ही ऐसी है कि यहाँ लगभग हर राज्य के विशेष लोकगीत हैं, जैसे पंजाब, राजस्थान, झारखंड इत्यादि में यह अलग–अलग भाषाओं और जनजातियों के द्वारा गाया जाता है।

अधिकांशतः पाया गया है कि लोकगीत चाहे वह राजस्थान की हो या किसी और प्रांत की, अधिकतर नारी कंठ से अभिव्यक्त हुए हैं। लोकगीत समाज को नारी वर्ग की सबसे बड़ी देन है।

(ख) लोकगीत साधारणतयाः देश के गाँवों और देहातों में समूह के रूप में गाये जाते हैं और इसके लिए किसी विशेष शिक्षा की जरूरत नहीं होती, जैसे शास्त्रीय संगीत के लिए होती है। शास्त्रीय संगीत किसी शिक्षक के मार्गदर्शन में सीखा जाता है, पर लोकगीत के लिए इसकी विशेषतया आवश्यकता नहीं होती।

(ग) विविधताओं का देश भारत अनेक मामलों में दूसरे देशों से भिन्न है। लोकगीतों में भी जहाँ दूसरे देशों में पुरुषों और स्त्रीयों के गीत लगभग एक–जैसे ही हैं, वहीं अपने देश में इसमें भी भिन्नता है।

2. (i) (क) **जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि**

मूल भावः संसार में प्रत्येक वस्तु और व्यक्ति का अपना विशेष महत्व और उपयोगिता होती है। किसी के आकार या शक्ति के आधार पर उसे छोटा या बड़ा नहीं माना जाना चाहिए।

भाव–विस्तारः यह प्रसिद्ध उक्ति रहीम दास जी के दोहे का अंश है। इसके माध्यम से कवि यह समझाना चाहते हैं कि हर छोटी और बड़ी वस्तु की अपनी–अपनी जगह और अहमियत होती है। जिस प्रकार कपड़े को सिलने के लिए एक छोटी सी सुई की आवश्यकता होती है, वहाँ बड़ी और शक्तिशाली तलवार काम नहीं आ सकती। तलवार युद्ध के मैदान में शत्रुओं को हराने में काम आ सकती है, लेकिन वह दो कपड़ों को जोड़ नहीं सकती।

जीवन में हमें कभी भी धन, बल या उच्च पद के अहंकार में छोटे लोगों या तुच्छ समझी जाने वाली वस्तुओं का तिरस्कार नहीं करना चाहिए। समय और परिस्थिति के अनुसार, एक साधारण व्यक्ति या छोटी वस्तु भी वह कर सकती है जो कोई शक्तिशाली व्यक्ति या बड़ी वस्तु नहीं कर सकती। अतः, प्रत्येक वस्तु की 'उपयोगिता' ही उसकी श्रेष्ठता का मापदंड है, न कि उसका आकार।

(ख) क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दंतहीन विषरहित, विनीत, सरल हो।

मूल भावः क्षमा और दया उसी व्यक्ति के आभूषण हैं जो समर्थ और शक्तिशाली है। शक्तिहीन और कायर व्यक्ति द्वारा दी गई क्षमा वास्तव में उसकी विवशता मानी जाती है।

भाव–विस्तारः यह ओजस्वी पंक्तियाँ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित हैं। यहाँ कवि का कहना है कि क्षमा करने का अधिकार उसी को है जिसके पास दंड देने की शक्ति हो। जिस सांप (भुजंग) के पास भयंकर विष (गरल) है, यदि वह किसी को न काटे और जाने दे, तो उसे उसकी दयालुता या क्षमा माना जाएगा और दुनिया उसकी प्रशंसा करेगी।

परंतु, जो सांप दंतहीन है, जिसमें विष नहीं है, जो पहले से ही कमजोर और सीधा है, उसके द्वारा 'काटना या न काटना' कोई मायने नहीं रखता। उसकी क्षमा को दुनिया उसकी कमजोरी, कायरता या मजबूरी समझती है।

मानव जीवन और राजनीति में भी यही सत्य है। एक शक्तिशाली राष्ट्र या व्यक्ति जब शांति की बात करता है, तो उसका प्रभाव होता है। लेकिन एक कमजोर व्यक्ति जब शांति की दुहाई देता है, तो उसे उसकी असमर्थता समझा जाता है। अतः क्षमा का मूल्य तभी है जब आपके पास प्रतिकार लेने का सामर्थ्य हो।

(ii) (क) जीवन में अन्य महत्वपूर्ण रिश्तों के होने के बावजूद एक इंसान के जीवन में मित्रता एक बहुत ही मूल्यवान रिश्ता है। कोई भी इंसान जीवन को पूरी तरह से संतोषजनक नहीं बिता सकता अगर उसके पास भरोसेमंद मित्र नहीं है। हरेक इंसान को जीवन की अच्छी–बुरी यादें, असहनीय घटना और खुशी के पल को साझा करने के लिये एक अच्छे और निष्ठावान मित्र की जरुरत होती है।

अच्छे दोस्त एक–दूसरे की संवेदनाओं और भावनाओं को बाँटते हैं जो स्वस्थ होने और मानसिक संतुष्टि का एहसास लाता है। एक मित्र ऐसा इंसान है जिसे कोई गहराई से जान सकता है और भरोसा कर सकता है। मित्रता में शामिल दो व्यक्तियों के स्वाभाव में कुछ एकरुपता होने के बावजूद, उनके पास कुछ अलग विशेषताएँ होती है। मित्रता के संदर्भ में सुकरात का एक कथन है-

'मित्रता करने में शीघ्रता मत करो, परंतु करो तो अंत तक निभाओ'।

–सुकरात

सच्चे मित्र आलोचक की तरह होते हैं। वे हमेशा सही मार्ग पर चलने की सलाह देते हैं। जो मनुष्य अपनी त्रुटियों से परिचित नहीं रहता, अपनी दुर्बलताओं का साक्षात्कार नहीं करता, वह जीवन में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है। सच्चा मित्र हमारा सर्वाधिक हितैषी होता है। लेकिन आज के भौतिकवादी युग में सच्चे मित्र का मिलना दुर्लभ है। अधिकांशतः मित्र अपना उल्लू सीधा करने के लिए सच्ची दोस्ती का स्वांग रचते है और अपने स्वार्थ की पूर्ति होते ही अंगूठा दिखा देते हैं। जब कोई व्यक्ति विपत्ति में पड़ता है, तब उसके सच्चे मित्र की पहचान होती हैं। सच्चे मित्र किसी भी परिस्थिति में साथ देने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इसलिए कहा गया है-

विपत्ति कसौटी जे कसे।
सोई साँचे मीत।।

(ख) मेहनत और भाग्य को लोग अलग–अलग करके देखते हैं। यह सामान्य कथन है कि भाग्य में होगा तब सब–कुछ मिलेगा। भाग्य प्रबल होगा तब घर बैठे सब–कुछ मिल जाएगा। पर यथार्थ के धरातल पर भाग्य पक्ष को तौल कर देखा जाए तब आपको सब–कुछ मिलने की सार्थकता बिल्कुल भी नहीं मिलेगी और मिलना भी नहीं चाहिए।

व्यक्ति मेहनत करने की बात को लेकर उतना नहीं सोचता जितना भाग्य के प्रबल होने की बात सोचता है। न केवल सोचता है बल्कि उसका सामान्य रूप से यही मानना रहता है कि जो चल रहा है वह अच्छा है और एक न एक दिन भाग्य का चक्र ऐसा घूमेगा कि घर में सुख–समृद्धि सभी कुछ आएगा और इस दिन के इंतजार में जिंदगी यूं ही निकल जाती है। भाग्य का सहारा मेहनत से ज्यादा लेने का परिणाम घातक ही होता है। इसी संदर्भ भूतपूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री का जीवन एक प्रेरणास्रोत है। लाल बहादुर शास्त्री एक साधारण परिवार से थे। वे स्वयं बढ़े, शिक्षित और सफल बने। स्वावलम्बन की शक्ति ही उनके जीवन में दृढ़ता बनकर विकसित हुई थी।

यही गुरुमंत्र उन्होंने अपनी सन्तानों को भी दिया। एक बार उनसे किसी मित्र ने प्रश्न किया – *आप अपने बच्चों को थोड़ा सहारा देते तो वे भी आज अच्छे स्थानों पर होते ?* शास्त्री जी हंसकर बोले – *'अवश्य होते, पर उनमें योग्यता न होती। जो स्वावलम्बन और आत्मविश्वास के साथ बढ़ता है उसकी योग्यता, दृढ़ता, कर्मठता, साहस और कर्तव्य भावना अदम्य होती है।'*

दूसरों का सहारा लेकर बहुत ऊँचे पहुंचे हुए लोगों में न तो वो साहस और दृढ़ता होती है, जो खुद से विकसित हुए व्यक्ति में स्थाई रूप से होती है। सफलता की मंजिल भले ही देर से मिले पर अपने पैरों की गई विकास यात्रा अधिक सराहनीय होती है। इसी संदर्भ में कहा गया है कि हैं-

हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे अवसर आते हैं जिनका बुद्धिमानी से उपयोग करके मनुष्य बिना भाग्य की प्रतीक्षा किए बड़ी सफलताएं प्राप्त कर सकता है।'

3. (i)

प्रेषक,

श्री पार्थ मिश्रा, (आई.ए.एस.)
मुख्य सचिव,
मुख्यमंत्री कार्यालय, राजस्थान

सेवा में,

पुलिस अधीक्षक,
भरतपुर जिला, राजस्थान
दिनांक : 01-02-2026

विषय : भरतपुर जिले में बिगड़ती कानून–व्यवस्था के संदर्भ में

महोदय,

माननीय मुख्यमंत्री की तरफ से मुझे यह कहने का निर्देश प्राप्त हुआ है कि विगत कुछ दिनों से भरतपुर जिले में कानून–व्यवस्था सुचारू रूप से चलने में बाधा आ रही है। जिसके परिणामस्वरूप जिले में हिंसा की घटनाएं बढ़ रही हैं। आपकी ये जिम्मेदारी बनती है कि इसे सुचारू रूप से चलाया जाए और ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति ना हो, इसकी सुनिश्चतता की जाए। राज्य सरकार इस संदर्भ में जिला प्रशासन को पूर्ण सहयोग करने में तत्पर है।

भवदीय
पार्थ मिश्रा (मुख्य सचिव)

अथवा

प्रेषक,

प्रियतम मनोहर
आयकर लिपिक, अनुमंडल आयकर विभाग
उदयपुर

सेवा में,

क्षेत्रीय आयकर अधिकारी
जयपुर जोन, राजस्थान
दिनांक : 01-02-2026

विषय : चालू वर्ष के लिए आयकर खाते में त्रुटि के संदर्भ में

महोदय,

चालू वर्ष 2025-26 के लिए आयकर खातों में जाँच के दौरान हमें ज्ञात हुआ है कि श्री रघुनाथ मिश्रा (PAN : MNORM1260J) के आयकर भुगतान में द्वितीय तिमाही की आयकर राशि में त्रुटियाँ हैं जिसके कारण चालू वर्ष के लिए आयकर भुगतान नहीं हो पाया है। इसलिए इस खाते की दोबारा जाँच के निर्देश दिये जाएँ।

भवदीय
प्रियतम मनोहर
आयकर लिपिक

(ii)

सेवा में,

प्रमुख प्रबंधक,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,
प्रमुख शाखा, जयपुर

विषय : ऋण के पूर्ण भुगतान के संदर्भ में

मान्यवर,

मैं आपके बैंक का नियमित खाताधारक हूँ। गत रविवार (दिनांक 01-02-2026) को मैंने आपके बैंक से ऋण के रूप में ली गयी राशि का पूर्ण भुगतान कर दिया है जो मैंने अपने व्यवसाय को सुचारू रूप से चलाने के लिए लिया था। अतः आपसे विन्रम निवेदन है कि मुझे अदेयता प्रमाणपत्र प्रदान किया जाये ताकि भविष्य में किसी प्रकार की कठिनाई ना हो।

धन्यवाद,

सुशील बिल्डर्स,
मालवीय नगर, जयपुर (राजस्थान)
पिन : 302017
दिनांक : 01-02-2026

भवदीय
सुशील कुमार

अथवा

सेवा में,

सचिव,

मानव संसाधन मंत्रालय,

भारत सरकार

विषय : वित्तीय राशि प्रदान करने के संदर्भ में

महोदय,

मंत्रालय द्वारा क्रियान्वित समग्र शिक्षा योजना के संदर्भ में मुझे यह सूचना देने का निर्देश हुआ है कि उल्लेखित योजना को सुचारू रूप से चलाने के लिए विभाग को राशि 100 करोड़ रूपये की आवश्यकता है। यह राशि राज्य में सभी दर्जे के स्कूलों और उससे जुड़े कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए उपयुक्त होगी। अतः सविनय निवेदन है कि विभाग को वित्तीय राशि प्रदान की जाए।

भवदीय

विवेक कुमार

अवर सचिव, शिक्षा विभाग

राजस्थान सरकार

दिनांकः 01-02-2026

4. (i)

अधिसूचना

जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय, जयपुर

क्रमांकः जपु/2026-26/67 उदयपुर, दिनांक 01 फरवरी, 2026

श्री शैलेश, थानाध्यक्ष कोतवाली पुलिस थाना को प्रथमदृष्टयाँ भ्रष्टाचार का दोषी पाते हुए (एफ.आई.आर. नं. 067/2026) तत्काल प्रभाव से निलंबन किया जाता है और उपरोक्त मामले के लिए एक जाँच कमिटी गठित की गयी है।

उक्त अधिसूचना की अग्रिम प्रतिलिपियाँ

(हस्ताक्षर)

मुकेश कुमार

जिला पुलिस अधीक्षक, जयपुर

निम्नलिखित को प्रेषित की गई-

1. गृह (संपर्क) अनुभाग, राजस्थान सरकार
2. प्रति महानिरीक्षक, जयपुर
3. पुलिस महानिदेशक, राजस्थान

अथवा

निविदा

राजस्थान सरकार

लोक निर्माण विभाग

क्रमांकः लोनिवि/जयपुर/2025-26/067 दिनांकः 01 फरवरी, 2026

निविदा सूचना संख्या 07, वर्ष 2026-26

राजस्थान सरकार के लोक निर्माण विभाग की ओर से निम्नांकित हस्ताक्षरकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित आवश्यक सामग्री जिसका उपयोग राज्यभर में 500 स्कूलों के भवन निर्माण के लिए होगा, हेतु मोहरबन्द निविदाएँ आमंत्रित की जाती हैं। इस हेतु आवेदन प्रपत्र दिनांक 1 मार्च को 3:00 बजे अपराह्न तक कार्यालय से प्राप्त किए जा सके हैं और दिनांक 2 मार्च को 3:30 बजे अपराह्न तक बंद लिफाफे में जमा करवाये जा सकते हैं। आवश्यक सामग्री का पूर्ण विवरण इस प्रकार है।

क्रम संख्या	सामग्री का विवरण	अनुमानित राशि (लाखों में)	निविदा शुल्क	सामग्री आपूर्त्ति की अवधि
1	X	1.50	100	2 माह
2	Y	2.50	100	6 माह
3	Z	3.00	500	3 माह

आवश्यक शर्तें:

1. सशर्त्त निविदाएँ मान्य नहीं होंगी।
2. तार द्वारा तथा विलंब से प्राप्त निविदाएँ मान्य नहीं होंगी।
3. बिना कारण बताए किसी निविदा अथवा समस्त निविदाओं को स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार सुरक्षित है।

(हस्ताक्षर)
पंकज पाठक
सचिव, लोक निर्माण विभाग
राजस्थान सरकार

(ii)

विज्ञप्ति

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार

भारत और रूस के बीच कूटनीतिक सम्बन्ध

भारत और रूस की सरकारें इस बात पर सहमत हो गई हैं कि दोनों देशों में दूतावास के स्तर पर कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित किए जाएँ। उन्हें विश्वास है कि इसके द्वारा दोनों देशों के बीच पहले से विद्यमान मित्रतापूर्ण सम्बन्ध और भी मजबूत होंगे और इससे दोनों देशों को लाभ पहुँचेगा।

विदेश मंत्रालय
नई दिल्ली, 01-02-2026

सौरभ कुमार
संयुक्त सचिव
भारत सरकार

अथवा

सं.-124/02/2026-स

राजस्थान सरकार,
कार्मिक विभाग, जयपुर
दिनांक : 01-02-2026

कार्मिक विभाग, राजस्थान सरकार के संज्ञान में यह ज्ञात हुआ है कि राज्य के विभिन्न विभागों में कर्मचारी सही समय पर कार्यालय नहीं पहुँच रहे हैं जिसकी वजह से कई महत्वपूर्ण कार्य समय पर पूर्ण नहीं हो पा रहे हैं। अतः सरकार ने यह फैसला लिया है कि जो कर्मी समय पर कार्यालय में उपस्थिति दर्ज नहीं करेंगे, उनके ऊपर अनुशासनात्मक कार्यवाही होगी।

वितरण : सभी मंत्रालय तथा संलग्न कार्यालयों को।

कनक मिश्रा
अवर सचिव, कार्मिक विभाग
राजस्थान सरकार

5. (i)

शिक्षा को विशिष्ट कौशल के शिक्षण और सीख तथा ज्ञान, निर्णय और बुद्धिमता प्रदान करने के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह शिक्षा की सामाजिक संस्था से कुछ व्यापक है, जिसकी हम अक्सर बात करते हैं।

प्लेटो आदिकाल के महत्वपूर्ण शैक्षिक विचारक थे, और उनके अनुसार शिक्षा एक आवश्यक तत्व है जिसका उन्होंने दर्शन और राजनीतिक सिद्धांत पर आधारित अपनी सबसे महत्वपूर्ण रचना "द रिपब्लिक" में वर्णन किया है। यह लगभग 360 ई.पू. में लिखा गया था। इसमें वह शिक्षा के चरम तरीकों की वकालत करते हैं, जैसे बच्चों को उनकी माताओं की देखभाल से दूर करना और उन्हें राज्य के संरक्षण में रखना और विभिन्न जातियों के लिए उपयुक्त बच्चों को अलग करना और उसके आधार पर सबसे अधिक शिक्षा प्राप्त करना ताकि वे राज्य के संरक्षक और कम सक्षम बच्चों के लिए अभिभावक के रूप में कार्य कर सकें। उनका मानना था कि शिक्षा समग्र होनी चाहिए, जिसमें तथ्य, कौशल, शारीरिक अनुशासन, संगीत और कला शामिल हों।

अरस्तू ने शिक्षा में संस्कारित होने के लिए मानव स्वभाव, आदत और कारण को समान रूप से महत्वपूर्ण माना। उन्होंने प्रस्ताव दिया कि शिक्षकों को अपने छात्रों को व्यवस्थित रूप से नेतृत्व करना चाहिए और यह कि पुनरावृत्ति से उनमें अच्छी आदत डालनी चाहिए, सुकरात के विचारों के विपरीत जिसमें उन्होंने विचारों को बाहर लाने के लिए अपने श्रोताओं से पूछने पर बल दिया ताकि उनकी खुद की कल्पना बाहर आये।

(ii)

लोग हमेशा वो नहीं करते हैं जिसकी हम उनसे अपेक्षा रखते हैं। हमारी अपेक्षाएँ चाहे कितनी भी वाजिब या कम क्यों न हों, ऐसे समय आते हैं जब हमारी अपेक्षा पूरी नहीं होती। स्वाभाविक रूप से, हम परेशान और आहत महसूस करते हैं जब हमारी अपेक्षाएं पूरी नहीं होती। हम टकराव से डरते हैं क्योंकि वे अप्रिय हैं और रिश्तों को नुकसान पहुंचा सकते हैं। फिर भी किसी व्यक्ति का सामना नहीं करना समस्या का समाधान नहीं करता क्योंकि अनसुलझे मुद्दे भी प्रतिकूल तरीके से रिश्तों को प्रभावित करते हैं। असल में टकराव की असली समस्या हमारी शैली में है, मुद्दे में नहीं।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आत्म–छवि सभी मनुष्यों का सबसे महत्वपूर्ण अधिकार है। इस तरीके से हम स्वयं को अपनी आँखों में और दूसरों को देखते हैं। आत्म–सचेत प्राणियों के रूप में, हम अपनी छवि के बारे में गहराई से जानते हैं और किसी भी क्षति से बचाने के लिए लगातार काम करते हैं। हम अपनी स्वयं की छवि के बारे में दूसरों से भी अनुमोदन चाहते हैं। यदि हम समझते हैं कि हमें अपनी आत्म–छवि के लिए थोड़ा सा भी खतरा है, तो हम विचलित महसूस करते हैं, क्योंकि हमारा चरित्र ही हमारे जीवन का सार है।

■■■■